रणजीत टाइम्स

इंदौर

शनिवार, 28 मार्च, 2026

वर्ष 02 | अंक 80 कुल पृष्ठ : 8 | Digital

RNI-NO.MPHIN/2015/64585

प्रधान संपादक : गोपाल गावंडे

राम मंदिर के सूर्य तिलक समारोह में वर्चुअली शामिल हुए प्रधानमंत्री मोदी, हाथ जोड़कर किया नमन

श्रीराम नवमी के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान राम की पूजा-अर्चना की। उन्होंने अयोध्या के राम मंदिर में सूर्य तिलक समारोह में वर्चुअल रूप से भाग लिया। शुक्रवार दोपहर 12 बजे भगवान सूर्य ने रामलला के ललाट पर तिलक किया।

यह लगभग चार मिनट तक चला। विशेष बात यह रही कि तिलक ठीक उसी समय हुआ, जो समय भगवान राम के जन्म का क्षण माना जाता है। इस बार रामनवमी पर रवि योग, सर्वार्थसिद्धि योग का विशेष संयोग भी बन रहा है। इससे इस आयोजन का धार्मिक महत्व और बढ़ गया। सूर्य तिलक के साथ ही रामलला का अभिषेक, श्रृंगार और अन्य धार्मिक कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण भी किया गया। देश-विदेश के श्रद्धालु इस दिव्य क्षण के साक्षी बनें।

पीएम मोदी ने किया यह पोस्ट

इससे पहले कल यानी गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट साझा की। जिसमें उन्होंने लिखा, देशभर के मेरे परिवारजनों को रामनवमी की असीम शुभकामनाएं। त्याग, तप और संयम से भरे मर्यादा पुरुषोत्तम के जीवन से हमें हर परिस्थिति का पूरे सामर्थ्य से सामना करने की प्रेरणा मिलती है। उनके आदर्श अनंतकाल तक भारतवासियों के साथ-साथ संपूर्ण मानवता के पथ-प्रदर्शक बने रहेंगे। मेरी कामना है कि भगवान राम की कृपा से सबका कल्याण हो, जिससे विकसित और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प की सिद्धि का मार्ग प्रशस्त हो।

ईरान ने शुरू किया 'ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस 4' का 83वां चरण, इस्राइल के ठिकानों पर मिसाइलों की बारिश

पश्चिम एशिया की धरती एक बार फिर दहक उठी है। ईरान ने शुक्रवार तड़के भीषण हमले कर यह साफ कर दिया है कि वह पीछे हटने के मूड में नहीं है। ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड्स (IRGC) ने 'ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस 4' के तहत 83वां चरण शुरू कर दिया है। इस बार ईरानी सेना ने न केवल इस्राइल को चोट दी है, बल्कि खाड़ी देशों में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को भी निशाना बनाया है।

अशदोद के तेल डिपो पर प्रहार

न्यूज एजेंसी एएनआई ने ईरानी मीडिया के हवाले से जानकारी दी है कि आईआरजीसी ने आधुनिक बैलिस्टिक मिसाइलों और सुसाइड ड्रोन्स के जरिए इस्राइल के अशदोद में तेल डिपो को निशाना बनाया है। हमले के बाद वहां आग लगने की बात कही जा रही है। इसके अलावा, इस्राइल के सैन्य ठिकानों पर भी सटीक हमले किए गए हैं।

ईरान के निशाने पर खाड़ी स्थित अमेरिकी एयरबेस

न्यूज़ एजेंसी एएनआई के मुताबिक, ईरान ने सीधे अमेरिकी अड्डों को अपना निशाना बनाया है। कुवैत के अली अल-सलेम एयरबेस और बहरीन के शेख ईसा बेस पर ईरानी मिसाइलें गिरी हैं। बताया जा रहा है कि बहरीन में पैट्रियट मिसाइल सिस्टम के रिपेयर हैंगर और जेट फ्यूल टैंकों को भारी नुकसान पहुंचा है। कुवैत और यूएई के अल-धाफरा बेस पर भी ईरानी ड्रोन्स ने सैन्य साजो-सामान को निशाना बनाया है।

नौसेना प्रमुख की मौत का प्रतिशोध

पिछले दिनों नौसेना प्रमुख रियर एडमिरल अलीरेजा तंगसिरी की मौत के बाद ईरान भड़क उठा है। इस्राइली हमले में तंगसिरी की मौत हुई थी। बताया जा रहा है कि ईरान इसी का प्रतिशोध ले रहा है। 28 फरवरी 2026 को ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई की मौत के बाद शुरू हुआ यह युद्ध अब वैश्विक संकट बन चुका है। ईरान ने होर्मुज जलडमरूमध्य को लगभग बंद कर दिया है। इसका नतीजा यह हुआ है कि पूरी दुनिया में तेल की सप्लाई ठप होने का खतरा पैदा हो गया है। हालांकि, अमेरिका ने 6 अप्रैल तक तेल डिपो पर हमले न करने की बात कही है, लेकिन जमीन पर स्थिति इसके उलट दिख रही है। मामले की जानकारी रखने वाले लोगों की माने तो अगर यह सिलसिला नहीं रुका, तो आने वाले दिनों में तेल गैस की भारी किल्लत हो सकती है।

उत्पाद शुल्क में कटौती केंद्र सरकार के जन-केंद्रित शासन को दर्शाती है: शाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि वैश्विक स्तर पर कीमतें बढ़ने के बीच ईंधन पर उत्पाद शुल्क घटाने का केंद्र सरकार का फैसला उसके जन केंद्रित शासन और संवेदनशीलता से प्रेरित निर्णय लेने की प्रक्रिया को रेखांकित करता है। शाह ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, ''पश्चिम एशिया संकट के बीच दुनिया ईंधन की कमी से जूझ रही है जिससे वैश्विक स्तर पर कीमतें बढ़ रही हैं, ऐसे में ईंधन पर उत्पाद शुल्क घटाने का (प्रधानमंत्री नरेन्द्र) मोदी के नेतृत्व वाली सरकार का फैसला नागरिकों के लिए बहुत राहत की बात है जिसकी उन्हें इस समय बहुत आवश्यकता है।''

केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा बृहस्पतिवार देर रात जारी एक अधिसूचना में बताया गया कि पेट्रोल पर उत्पाद शुल्क 13 रुपये प्रति लीटर से घटाकर तीन रुपये प्रति लीटर कर दिया गया है जबकि डीजल पर यह शुल्क पहले के 10 रुपये से घटाकर शून्य कर दिया गया है। मंत्रालय ने कहा कि शुल्क में यह कटौती तत्काल प्रभाव से लागू हो गई है। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरत का 88 प्रतिशत और प्राकृतिक गैस की आवश्यकता का लगभग आधा हिस्सा आयात करता है। उन्होंने लिखा, ''कई देशों ने डीजल और पेट्रोल की कीमतें बढ़ाई हैं, ऐसे में उत्पाद शुल्क घटाने का मोदी सरकार का फैसला उसके जन केंद्रित शासन और संवेदनशीलता से प्रेरित निर्णय लेने की प्रक्रिया को रेखांकित करता है। इस फैसले के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बधाई।''

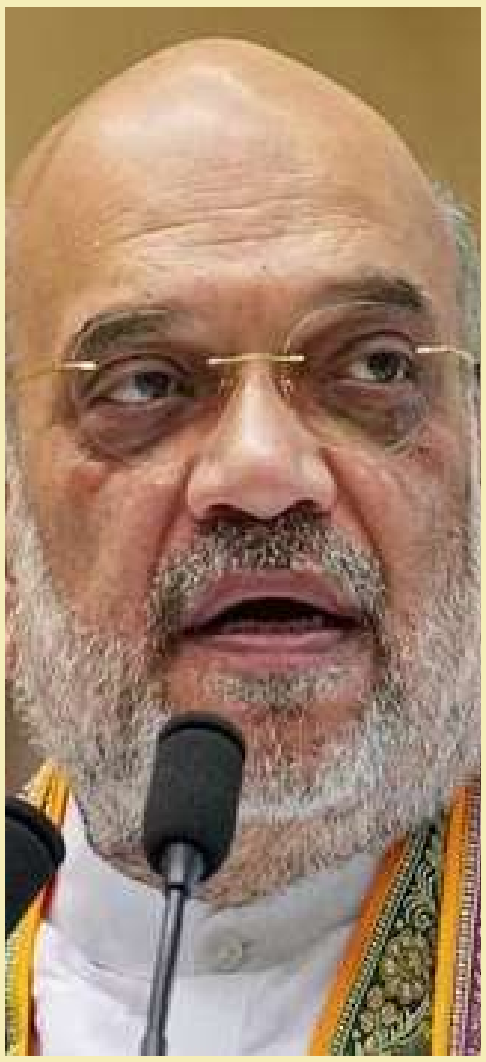

पिता बनने की मुस्कान के पीछे छिपा तनाव, नई रिसर्च ने खोला अनदेखा सच

नई दिल्ली। घर में बच्चे का जन्म आमतौर पर खुशियों का सबसे बड़ा अवसर माना जाता है। पूरा परिवार इस नए जीवन के स्वागत में जुट जाता है और ध्यान स्वाभाविक रूप से मां और नवजात की सेहत पर केंद्रित हो जाता है। लेकिन इसी उत्सव के बीच एक ऐसा पक्ष भी है, जिस पर शायद ही कभी खुलकर बात होती है—पिता बनने के बाद पुरुषों की मानसिक स्थिति। हाल ही में प्रकाशित एक महत्वपूर्ण अध्ययन ने इस अनदेखे पहलू को सामने लाते हुए बताया है कि पिता बनने के बाद पुरुषों में भी तनाव और अवसाद की स्थिति विकसित हो सकती है, लेकिन यह तुरंत नजर नहीं आती। यह धीरे-धीरे बढ़ती है और अक्सर एक साल बाद अपने प्रभाव के साथ सामने आती है।

यह अध्ययन प्रतिष्ठित जर्नल JAMA Network Open में प्रकाशित हुआ है और इसे Karolinska Institute के शोधकर्ताओं द्वारा किया गया। इस रिसर्च में स्वीडन के करीब 10 लाख पिताओं के व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य का विश्लेषण किया गया, जिसमें चौंकाने वाले निष्कर्ष सामने आए। शोध के अनुसार, पत्नी की गर्भावस्था के दौरान और बच्चे के जन्म के शुरुआती महीनों में अधिकांश पुरुष खुश, उत्साहित और संतुलित नजर आते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे नई जिम्मेदारियों को सहजता से निभा रहे हों। परिवार और समाज भी इसी धारणा को सच मान लेते हैं कि पिता इस बदलाव को बिना किसी मानसिक दबाव के संभाल रहे हैं।

लेकिन असली तस्वीर कुछ समय बाद बदलती है। अध्ययन में पाया गया कि बच्चे के जन्म के लगभग एक साल बाद पिताओं में तनाव और अवसाद का स्तर अचानक बढ़ने लगता है। यह वृद्धि इतनी अधिक होती है कि यह प्रेग्नेंसी से पहले के स्तर की तुलना में करीब 30 प्रतिशत तक ज्यादा हो जाती है। यह तथ्य इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आम धारणा के विपरीत, सबसे ज्यादा दबाव शुरुआत में नहीं बल्कि समय बीतने के साथ महसूस होता है। विशेषज्ञों के अनुसार, इसके पीछे कई कारण होते हैं। शुरुआती उत्साह धीरे-धीरे दिनचर्या में बदल जाता है, जिससे नई जिम्मेदारियों का बोझ महसूस होने लगता है। लगातार नींद की कमी मानसिक थकान को बढ़ाती है और व्यक्ति चिड़चिड़ा या उदास महसूस करने लगता है। इसके अलावा पति-पत्नी के रिश्ते में भी बदलाव आता है, जहां रोमांटिक संबंध की जगह पूरी तरह से पेरेंटिंग की जिम्मेदारी ले लेती है। इससे भावनात्मक दूरी या तालमेल में कमी आ सकती है। आर्थिक और भविष्य से जुड़ी चिंताएं भी इस तनाव को बढ़ाती हैं। बच्चे की परवरिश, शिक्षा और सुरक्षा को लेकर पिता के मन में लगातार विचार चलते रहते हैं, जो धीरे-धीरे मानसिक दबाव का कारण बनते हैं। इस अध्ययन की प्रमुख शोधकर्ता Jing Zhou का कहना है कि पिता अक्सर अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं करते। वे बाहरी तौर पर खुश नजर आते हैं, लेकिन अंदर ही अंदर वे थकान, जिम्मेदारी और भावनात्मक दबाव के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रहे होते हैं। यही वजह है कि शुरुआती महीनों में उनकी खुशी, अंदर पनप रहे तनाव को छिपा देती है। यह शोध एक महत्वपूर्ण संदेश देता है कि पेरेंटिंग केवल मां की जिम्मेदारी या मानसिक स्थिति तक सीमित नहीं है। पिता भी इस प्रक्रिया का उतना ही महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उनकी मानसिक सेहत पर ध्यान देना भी उतना ही जरूरी है। आज के समय में, जब मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बढ़ रही है, यह आवश्यक है कि समाज पुरुषों की भावनाओं को भी समझे और उन्हें व्यक्त करने का अवसर दे। यदि पिता के मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज किया गया, तो इसका असर न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन पर पड़ेगा, बल्कि पूरे परिवार के वातावरण पर भी दिखाई देगा। अंततः, यह समझना जरूरी है कि एक स्वस्थ और खुशहाल परिवार के लिए दोनों माता-पिता का मानसिक रूप से संतुलित और मजबूत होना जरूरी है। पिता की मुस्कान के पीछे छिपे तनाव को पहचानना और समय रहते उसका समाधान करना ही इस नई जिम्मेदारी को सहज और सुखद बना सकता है।

अशोक बने बीजेपी महाराणा प्रताप मंडल के मीडिया प्रभारी

दिव्यानंद अर्गल

ग्वालियर।भारतीय जनता पार्टी के महाराणा प्रताप मंडल के मंडल अध्यक्ष आशु श्रीवास के द्वारा अशोक सोनी को मंडल का मीडिया प्रभारी बनाया गया. आशु श्रीवास ने कहा कि अशोक सोनी का नाम साफ स्वच्छ छवि के रूप में जाना जाता है अशोक सोनी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत कम समय में एक अच्छा नाम हासिल किया है कई बार वह विभिन्न संस्थाओं और अधिकारियों के द्वारा माध्यम से सम्मानित हो चुके हैं, ग्वालियर चंबल संभाग में एक अच्छा नाम ईमानदारी के रूप में कमाया है सोनी ने कहा कि मंडल अध्यक्ष आशु श्रीवास के द्वारा मीडिया प्रभारी का जो दायित्व सौपा है उसकी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाएंगे तथा समाज के हित में कार्य करेंगे | आशु श्रीवास ने अपनी नवीन

कार्यकारिणी का उत्साह वर्धन कर कहा आपके द्वारा भारतीय जनता पार्टी को मजबूती मिलेगी ये मेरा विश्वास है।

रामनवमी और प्रभु रामचरित्र समाज में मर्यादा, नीति, धर्म, सत्य और त्याग का संदेश है - डॉ. भरत शर्मा

प्रभु श्रीराम के प्राकट्युत्सव पर इंदौर शहर में राममंदिर परिसर पर संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार सदस्य डॉ. भरत शर्मा के मुख्य आतिथ्य में विशेष वैदिक पूजन और प्रभु राम का अभिषेक समाहरोहपूर्वक किया गया। उक्त अवसर पर डॉ. भरत शर्मा ने कहा कि भारत और विश्व में युवाओ को नेतृत्व क्षमता, कर्तव्यबोध, चरित्रनिर्माण और प्रायश्चित का भाव जाग्रत कर, रामचरित्र उनके भविष्य निर्माण के साथ ही राष्ट्रनिर्माण का सिद्ध साधन है। भगवान राम के आदर्श की प्रासंगिकता आज भी त्रेता युग से संबद्ध है, उनके जीवन दर्शन से तार्किक प्रमाणित होता है कि आदर्श जीवन शैली से ही सच्ची सफलता, धर्मपरायणता प्राप्त की जा सकती है। जीवनपथ पर हम सत्य और धर्म के मार्ग पर चलकर ही विजय प्राप्त कर सकते है । प्रभु श्रीराम के प्राकट्युत्सव उनका अभिषेक और पूजन पंडित श्री राजीव बाजपेयी द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार, रामस्तुति, सुंदरकांड, ध्यान, आव्हान, स्नान, अलंकार, भोग व महाआरती से किया गया। पंजीरी, हलवे, फल और पंचामृत के विशेष प्रसाद का वितरण भी सोसाइटी

के सदस्यों द्वारा किया गया।

उक्त अवसर पर मंदिर परिसर में आयोजित जन्मोत्सव में विशेष रूप से समाजसेवी वीरेंद्र पौराणिक, प्रीति चौगाँस्कर, गिरधर सिंह सिसोदिया, के.पी. भट्ट, शिंदे जी और बड़ी संख्या में शालीमार पाल्म्स के पदाधिकारी और वरिष्ठ रहवासीगण मौजूद रहे।

रणजीत टाइम्स

राम नवमी पर इंदौर हुआ राममय

जवाहर टेकरी से रणजीत हनुमान मंदिर तक निकली ऐतिहासिक भव्य शोभा यात्रा, जय श्री राम के जयघोष से गूंजा शहर

आदित्य शर्मा

इंदौर । श्री राम नवमी के पावन पर्व पर शहर में आस्था, उत्साह और भक्ति का अभूतपूर्व संगम देखने को मिला। जवाहर टेकरी स्थित इच्छा पूर्ण बालाजी मंदिर से रणजीत हनुमान मंदिर तक एक भव्य, विशाल और ऐतिहासिक शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों नहीं बल्कि हजारों से भी अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लेकर पूरे शहर को राममय कर दिया। सुबह से ही मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी।

विधि-विधान के साथ भगवान श्रीराम का पूजन-अर्चन कर यात्रा का शुभारंभ किया गया जैसे ही शोभा यात्रा आगे बढ़ी, पूरा मार्ग "जय श्री राम", "जय हनुमान" और "हर-हर महादेव" के गगनभेदी नारों से गूंज उठा। श्रद्धालुओं का जोश, भक्ति और ऊर्जा देखते ही बन रही थी।

आकर्षक झांकियां बनीं मुख्य आकर्षण, हर किसी की नजरें ठहर गईं

शोभा यात्रा में भगवान श्रीराम, माता सीता, लक्ष्मण और पवनपुत्र हनुमान की जीवंत झांकियां सजाई गईं, जिन्होंने सभी का मन मोह लिया। रंग-बिरंगी रोशनी, फूलों से सजे रथ, पारंपरिक वेशभूषा में कलाकारों की प्रस्तुतियां और धार्मिक संगीत ने माहौल को पूरी तरह भक्तिमय बना दिया। ढोल-नगाड़ों की गूंज, बैंड-बाजों की धुन और डीजे पर बजते भक्ति गीतों के बीच युवा वर्ग भी जमकर झूमता नजर आया। जगह-जगह समाजसेवियों एवं स्थानीय नागरिकों द्वारा मंच लगाकर पुष्प वर्षा की गई और यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। विशेष अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति, दिया एकता और धर्म का संदेश इस भव्य आयोजन में विशेष अतिथि के रूप में राऊ विधायक मधु जी वर्मा, वरिष्ठ समाजसेवी जीतू जी जिराती, तन्नू जी शर्मा, अखिल भारतीय बलाई महासंघ के अध्यक्ष मनोज जी परमार, जिला पंचायत सदस्य दिलीप जी पटेल एवं सरपंच नारायण चौहान उपस्थित रहे।

सभी अतिथियों ने भगवान श्रीराम के आदर्शों-सत्य, मर्यादा, धर्म और त्याग-को जीवन में अपनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजन समाज में एकता, भाईचारे और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। सुरक्षा और व्यवस्था रही चाक-चौबंद, प्रशासन रहा पूरी तरह मुस्तैद इतने बड़े आयोजन को देखते हुए प्रशासन और पुलिस विभाग द्वारा सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए थे। पूरे मार्ग पर पुलिस बल तैनात रहा और यातायात व्यवस्था को भी सुचारु बनाए रखा गया। स्वयंसेवकों की टीम ने भी भीड़ को नियंत्रित करने और श्रद्धालुओं की सुविधा का विशेष ध्यान रखा।

यात्रा संयोजकों की मेहनत लाई रंग, बना आयोजन ऐतिहासिक इस भव्य शोभा यात्रा को सफल बनाने में यात्रा संयोजक अज्जू जी यादव, सूरज जी चौहान एवं लेखराज जी गेहलोत की अहम भूमिका रही। इनके साथ पूरी टीम ने दिन-रात मेहनत कर आयोजन को भव्य और अनुशासित बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। स्थानीय नागरिकों ने भी आयोजन की सराहना करते हुए इसे "इंदौर की सबसे भव्य और अनुशासित शोभा यात्राओं में से एक" बताया।

देहबुद्धि से आत्मबुद्धि में स्थित होने की प्रक्रिया है सहजयोग

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता

'भगवद्गीता'परमपूज्य श्री माताजी प्रणित सहजयोग अपने जीवन को सर्वांगसुंदर बनानेवाला एक अनुभुतिजन्य ध्यानाविष्कार है, जिसे विश्व का कोई भी व्यक्ति, जो अध्यात्मिकता की खोज कर रहा हो, अपने अराध्य को पाने के लिये धर्मग्रंथों का पठन कर रहा हो, मंदिरों में जाकर विविध प्रकार की पूजायें अर्पित कर रहा हो, उसे यह योग प्राप्त होता है । सहज योग एक 'सत्ययोग' है , इसलिये सभी सत्य के साधक जो 'परम' को पाना चाहते हैं, और उस परम को पाने की ललक में तीर्थयात्रायें कर रहे हैं, व्रतवैकल्यों का अनुसरण कर रहे हैं उन्हें अपनी अंतरात्मा से पूछना पड़ेगा कि, क्या मुझे अंतरंग परमात्मा के परमानंद की अनुभूति प्राप्त हुई ? अगर आपका उत्तर सकारात्मक है, तो उपरोक्त श्लोक मे वर्णित कूर्म जैसे आप अपने पंच ज्ञानेंद्रीयों को अंतरात्मा में स्थापित कर, बाहर की सभी नकारात्मकता से स्वयं को बचाकर, निरानंद का आनंद उठा पा रहे हैं? यदि नहीं तो सहजयोग आपकी राह देख रहा है । परमपूज्य श्री माताजी कहते हैं कि, आप आत्मा को पाये बगैर परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते । और अपने हृदयस्थित आत्मा को पाने के लिये आपको हृदय में विनम्रता

का भाव धारण कर श्री आदी शक्ति से अपना आत्मसाक्षात्कार माँगना होगा, जब आपका योग घटित होगा तब आपके पिंड में स्थित कुंडलिनी माता उर्ध्वगामी होकर आपके सहस्त्रार का भेदन कर ,आपको शीतल चैतन्य लहरियों का स्नान करा देगी । और इस आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के बाद जिस प्रकार आप आईने में अपने मुखमंडल का अवलोकन करते हैं उसी प्रकार आप अपने आत्मारूपी आईने से अपने अंतरंग को मलीन करने वाले षड् रिपुओं को देख सकेंगे । जब आप आपने अंदर के दोषों को देख सकेंगे तो पूरी इमानदारी से उसे धोने की कोशिश करेंगे और इसके उपरांत आप एक बच्चे जैसे बन जायेंगें, बच्चों में अपने पराए का भाव नहीं होता, वे सभी को अपना समझते हैं, उसी प्रकार की अबोधिता एक आत्मसाक्षात्कार प्राप्त साधक में होनी चाहिये। श्री माताजी कहते हैं कि, भगवान श्रीकृष्ण हमारे विशुद्धि चक्र पर विराजमान हैं, नियमित ध्यान से जब हमारा विशुद्धि चक्र स्वच्छ होता है, तो वह चक्र हमे वाणी मधुरता, सामुहिकता, साक्षीभाव प्रदान करता है । श्रीकृष्ण हमें अनेक शक्तियों से आशीर्वादित करते हैं। ध्यान करने वाले समूह के सहस्त्रार से उत्सर्जित सामूहिक चैतन्य लहरियों से अपने व्यक्तिगत, सामाजिक ही नहीं वैश्विक प्रश्न भी हल किये जा सकते हैं । श्रीकृष्ण की इसी शक्ति के कारण हम सभी सत्य के साधकों तक अपनी वाणी, लेखनी और ध्यान के माध्यम से पहुँच सकते हैं और उन्हें उनके जीवन का महानतम उपहार अर्थात आत्मसाक्षात्कार प्रदान कर सकते हैं। उपरोक्त वर्णित भगवद्गीतासे लिया गया जो श्लोक है उसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार कूर्म ('कासव') जब उसके उपर कोई संकट आता है तो अपने अवयव कवच के अंदर खींच लेता है और अपने आपको बचाता है , उसी प्रकार आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति नकारात्मकता से खुद को बचा सकता है। वह तत्क्षण देह बुद्धि से आत्मबुद्धि में स्थित हो जाता है, भगवान के साम्राज्य में चला जाता है, जहाँ कोई भी विनाशकारी शक्ति उसका बाल भी बांका नहीं कर सकती । यह श्रीकृष्ण की शक्ति का सबसे बड़ा आशीर्वाद है, जिसे प्रत्येक साधक प्राप्त कर सकता है। तो आइये सहजयोग सीखते हैं। सहजयोग की जानकारी टोल फ्री 18002700800 से तथा यूट्यूब चैनल लर्निंग सहजयोगा से प्राप्त कर सकते हैं।

अवैध मादक पदार्थों की गतिविधियों के विरुद्ध पुलिस थाना राऊ इंदौर की प्रभावी कार्यवाही...

ब्राउन शुगर तस्करी करने वाले 3 शातिर ड्रग पेडलर गिरफ्तार आरोपियों के कब्जे से अवैध मादक पदार्थ 27 ग्राम ब्राउन शुगर (अंतरराष्ट्रीय कीमत लगभग 2,70,000) एवं एक मोटर साइकिल जप्त।

आदित्य शर्मा

इंदौर शहर में अवैध मादक पदार्थों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस थाना राऊ को बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। पुलिस टीम द्वारा कार्यवाही करते हुए कुख्यात तस्कर अंकित उर्फ बाबा सहित तीन आरोपियों को ब्राऊन शुगर के साथ गिरफ्तार किया गया है। शहर में अवैध मादक पदार्थों की गतिविधियों के विरुद्ध पुलिस आयुक्त नगरीय इंदौर श्री संतोष सिंह द्वारा प्रभावी कार्यवाही के दिए निर्देशों के अनुक्रम में पुलिस उपायुक्त जोन-1 श्री कृष्ण लालचंदानी के मार्गदर्शन में थाना राऊ पुलिस द्वारा लगातार अवैध मादक पदार्थों की तस्करी में संलिप्त व्यक्तियों पर निगरानी रखी जा रही थी। इसी कड़ी में दिनांक 26/03/2026 की रात्रि में क्षेत्र भ्रमण एवं संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग के दौरान रंगवासा फाटा, गुरुकुल मैदान के पास सुनसान इलाके में एक संदिग्ध मोटरसाइकिल को घेराबंदी कर रोका गया। तलाशी लेने पर आरोपियों के कब्जे से 27 ग्राम ब्राउन शुगर मिलीं जिसे विधिवत जप्त किया गया। पूछताछ में सामने आया कि आरोपी शहर में मादक पदार्थ की सप्लाई कर युवाओं को नशे की लत लगाने तथा अपना नेटवर्क विस्तार करने में सक्रिय थे।

आरोपियों के विरुद्ध थाना राऊ, इंदौर में धारा 8/21 एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है, जिसमें विवेचना के आधार पर अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। साथ ही अवैध मादक पदार्थ के स्रोत एवं अन्य साथियों के संबंध में विस्तृत पूछताछ जारी है।

गिरफ्तार आरोपी

अंकित उर्फ बाबा पंचोली, उम्र 30 वर्ष, निवासी राजनगर, इंदौर

महिपाल उर्फ मोहित विष्ट, उम्र 29 वर्ष, निवासी रंगवासा, राऊ, इंदौर

श्याम बैरागी, उम्र 44 वर्ष, निवासी राजनगर, इंदौर

जप्त मश्रुका- 27 ग्राम ब्राउन शुगर (अंतरराष्ट्रीय कीमत लगभग 2,70,000) व एक मोटरसाइकिल (स्प्लेंडर) कीमत 60,000 कुल जप्त मश्रुका 3,30,000 सराहनीय भूमिका उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी राऊ निरीक्षक राजपाल सिंह राठौड़, उप निरीक्षक प्रवीण जाधव, प्रधान आरक्षक पवन त्रिपाठी, आरक्षक कमलेश चोरे, नारायण यदुवंशी, उपेंद्र, सुनिल एवं साइबर सेल जोन–1 की अहम भूमिका रही। अवैध मादक पदार्थों की गतिविधियों के विरुद्ध पुलिस थाना राऊ इंदौर की प्रभावी कार्यवाही..

रामनवमी पर जय श्रीराम के जयकारों से गूंजा अशोकनगर

राष्ट्रीय बजरंग दल का सेवा भाव शोभायात्रा में किया जल वितरण

रवि वंशकार

अशोकनगर। रामनवमी के पावन अवसर पर शहर के सराफा बाजार स्थित श्री हनुमान मंदिर में श्रीराम जन्मोत्सव बड़े ही भव्य एवं श्रद्धा भाव के साथ मनाया गया। दोपहर 12 बजे से प्रारंभ हुए इस धार्मिक आयोजन

में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत भजन-कीर्तन से हुई, जिसमें भक्तों ने भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव का उल्लासपूर्वक स्वागत किया जन्मोत्सव के उपरांत दोपहर 3 बजे भगवान श्रीराम की भव्य एवं विशाल रथ यात्रा श्री हनुमान मंदिर सराफा बाजार से प्रारंभ हुई। यह रथ यात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए निकाली गई, जिसमें सुभाष गंज, स्टेशन रोड, गांधी पार्क, मिलन चौराहा, विदिशा रोड, लंबरदार गली, बजरिया मोहल्ला, पटेल पार्क और इंदिरा पार्क शामिल रहे। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर भगवान श्रीराम का स्वागत किया और भक्ति में सराबोर नजर आए। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद एवं राष्ट्रीय बजरंग दल द्वारा मिलन चौराहा पर शोभायात्रा में सेवा भाव का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया गया। संगठन के कार्यकर्ताओं ने भीषण गर्मी को देखते हुए श्रद्धालुओं के लिए जल वितरण की व्यवस्था की, जिससे लोगों को काफी राहत मिली। सेवा कार्य में कार्यकर्ताओं का उत्साह देखते ही बन रहा था कार्यक्रम में राष्ट्रीय बजरंग दल के विभाग अध्यक्ष राजेन्द्र नामदेव की विशेष उपस्थिति रही। वहीं अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष संतोष रजक ने भगवान श्रीराम के रथ का विधिवत माल्यार्पण एवं आरती कर पूजन किया। उन्होंने प्रदेश एवं जिले की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए भगवान से प्रार्थना की। इस अवसर पर मनोज जैन, नारायण सिंह विरग, विजय रजक, राजकुमार नामदेव, कला अहिरवार, ध्रुव रजक सहित बड़ी संख्या में संगठन के पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। पूरे शहर में निकली इस शोभायात्रा ने भक्ति, उल्लास और एकता का अद्भुत संदेश दिया।

रास्ता खुला, पर खतरा काय

क्या सच में टला संकट ?

अमेरिका-इस्त्राइल व ईरान के बीच जारी संघर्ष में किसी पक्ष के झुकने के लिए तैयार न होने से पश्चिम एशिया में स्थितियां भले ही जटिल बनी हुई हैं, लेकिन इस दरमियान ईरानी विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने भारत, चीन और रूस जैसे कुछ मित्र राष्ट्रों के व्यावसायिक जहाजों को होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने की अनुमति देने की घोषणा कर, इन राष्ट्रों को राहत जरूर दे दी है। उल्लेखनीय है कि फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी के बीच स्थित इस संकरे समुद्री परिवहन मार्ग के अवरुद्ध होने के बाद से ही वैश्विक तेल और गैस की कीमतों में भारी उछाल आया हुआ है। इस मार्ग से वैश्विक तेल और प्राकृतिक गैस का करीब 20 फीसदी हिस्सा तो गुजरता ही है, भारत को होने वाली कुल ईंधन आपूर्ति का 40 फीसदी से अधिक आयात यहीं से होता है। भारत के लिए यह इसलिए भी अधिक अहम है, क्योंकि दुनिया में कच्चे तेल के तीसरे सबसे बड़े आयातक होने के साथ हम दुनिया में आयातित ऊर्जा पर सर्वाधिक निर्भर अर्थव्यवस्थाओं में से भी एक हैं। यह देखते हुए कि ईरानी विदेश मंत्री ने अपने दुश्मन देशों से जुड़े जहाजों को इस रणनीतिक जलमार्ग से गुजरने की अनुमति नहीं दी है, भारत सहित चुनिंदा देशों के लिए ईरान का यह निर्णय एक हद तक कूटनीतिक उपलब्धि के तौर पर भी देखा जा सकता है। जाहिर है, भारत के संदर्भ में इसका श्रेय उन राजनयिक प्रयासों को जाना चाहिए, जो पिछले कुछ हफ्तों में सरकार की तरफ से पश्चिम एशिया में संघर्ष के शीघ्र खात्मे और होर्मुज के जरिये ऊर्जा के निर्बाध प्रवाह को सुनिश्चित करने को लेकर किए गए हैं। पश्चिम एशिया में संघर्ष विराम की संभावना पैदा होने के बाद तेल की कीमतों में कुछ गिरावट जरूर दिखी है, लेकिन अगर युद्धरत पक्षों में युद्ध खत्म करने की शर्तों पर सहमति नहीं बनी तथा यह युद्ध और लंबा खिंचा, तो भारत के पहले से बढ़ रहे आयात बिल पर बोझ और बढ़ जाएगा, जिसका असर आम इन्सान के बजट पर भी पड़ेगा। लिहाजा, ईरानी विदेश मंत्री की घोषणा तात्कालिक तौर पर फायदेमंद हो सकती है, पर स्थायी शांति और ऊर्जा आपूर्ति को स्थिर बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयासों की जरूरत है। इस जटिल स्थिति में भारत की सक्रिय कूटनीति ने जो संतुलन बनाए रखा है, वह हमारी आर्थिक सुरक्षा व क्षेत्रीय स्थिरता के लिए अहम है। पर जब तक सभी पक्ष संयम बरतते हुए संवाद का रास्ता नहीं अपनाएंगे, वैश्विक अर्थव्यवस्था पर संकट मंडराते रहेंगे।

आरक्षण की बहस-इतिहास, भ्रम और समकालीन यथार्थ

भारतीय समाज में आरक्षण को लेकर समय-समय पर उठने वाली बहसें केवल नीतिगत प्रश्न नहीं होतीं, बल्कि वे हमारे इतिहास, सामाजिक संरचना और वर्तमान चुनौतियों से भी गहराई से जुड़ी होती हैं।

अक्सर यह तर्क सामने आता है कि प्राचीन भारतीय समाज में विभिन्न वर्गों के बीच कार्य विभाजन पहले से ही निश्चित था—किसी का कार्य स्वर्ण आभूषण बनाना, किसी का लोहे के औजार तैयार करना, तो किसी का कृषि, व्यापार या सेवा से जुड़ा कार्य। इस दृष्टिकोण से कुछ लोग इसे 'प्राकृतिक आरक्षण' के रूप में प्रस्तुत करते हैं और वर्तमान आरक्षण व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं। यह सत्य है कि भारतीय समाज में लंबे समय तक व्यवसाय आधारित संरचना विद्यमान रही। सुनार, लोहार, कुम्हार, बढ़ई, दर्जी, नाई, माली, चर्मकार, ग्वाला जैसे अनेक समुदाय अपने-अपने कौशल और परंपरागत व्यवसायों से समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहे। यह व्यवस्था उस समय की आर्थिक संरचना के अनुरूप थी, जब औद्योगिक विकास और आधुनिक रोजगार के अवसर सीमित थे। परिवार और समुदाय के भीतर पीढ़ी दर पीढ़ी कौशल का हस्तांतरण होता था, जिससे जीवनयापन सुनिश्चित रहता था।

किन्तु इस व्यवस्था को 'आरक्षण' कहना एक सरलीकृत दृष्टिकोण हो सकता है। क्योंकि वास्तविकता यह भी रही है कि इन परंपरागत व्यवसायों के साथ सामाजिक ऊँच-नीच और भेदभाव की परतें भी जुड़ी रहीं। अनेक समुदायों को केवल उनके कार्य के आधार पर सामाजिक रूप से सीमित कर दिया गया, जिससे उनके लिए अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ना कठिन हो गया। यही वह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, जिसने आगे चलकर सामाजिक न्याय की आवश्यकता को जन्म दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब भारतीय संविधान का निर्माण हुआ, तो उसमें समान अवसर और सामाजिक न्याय को मूल आधार बनाया गया। आरक्षण की व्यवस्था इसी सोच का परिणाम है—एक ऐसा प्रयास, जिससे उन वर्गों को मुख्यधारा में लाया जा सके, जो ऐतिहासिक रूप से वंचित रहे। यह केवल रोजगार का प्रश्न नहीं, बल्कि शिक्षा, प्रतिनिधित्व और सम्मान से जुड़ा विषय है। यह भी विचारणीय है कि अतीत में कार्य विभाजन के बावजूद क्या सभी वर्गों को समान अवसर प्राप्त थे? क्या हर व्यक्ति अपने पारंपरिक पेशे से बाहर निकलकर नई दिशा चुन सकता था? यदि नहीं, तो यह स्पष्ट होता है कि व्यवस्था में कहीं न कहीं सीमाएँ थीं, जिन्हें दूर करने की आवश्यकता थी। वर्तमान समय में आरक्षण की बहस को केवल भावनात्मक या ऐतिहासिक तर्कों तक सीमित रखना उचित नहीं है। हमें यह समझना होगा कि समाज निरंतर परिवर्तनशील है। आज शिक्षा, तकनीक और वैश्विक अवसरों का युग है, जहाँ किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कौशल और परिश्रम से बनती है। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाएँ—जहाँ सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित हो और योग्यता का सम्मान भी बना रहे। साथ ही, यह भी जरूरी है कि हम परंपरागत व्यवसायों के सम्मान को पुनः स्थापित करें। कारीगर, शिल्पकार और श्रमिक वर्ग आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। यदि उन्हें आधुनिक संसाधन, प्रशिक्षण और बाजार उपलब्ध कराए जाएँ, तो वे न केवल आत्मनिर्भर बन सकते हैं, बल्कि देश की आर्थिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अंततः, आरक्षण का विषय किसी एक पक्ष की जीत या हार का नहीं, बल्कि सामाजिक संतुलन और समरसता का है। हमें इस विषय पर संवाद, समझ और संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ना होगा। इतिहास से सीख लेते हुए वर्तमान को सुधारना और भविष्य को बेहतर बनाना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। आरक्षण की वास्तविक बहस तभी सार्थक होगी, जब हम इसे विभाजन का नहीं, बल्कि समावेश और समान अवसर का माध्यम मानेंगे। तभी समाज में वह संतुलन स्थापित हो सकेगा, जिसकी परिकल्पना हमारे संविधान ने की थी।

राम के आदर्शों में ही मानवता का कल, संघर्षों के बीच धर्म ही समाधान

भारतीय संस्कृति में Lord Rama केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और शाश्वत जीवन दर्शन के सजीव प्रतीक हैं। वे ऐसे आदर्श पुरुष हैं, जिनकी कथा सदियों से समाज के हर वर्ग को दिशा देती आई है। चाहे वह शिक्षित वर्ग हो या सामान्य जन, श्रीराम का जीवन संघर्ष, धैर्य, त्याग और मर्यादा का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था। प्राचीन ग्रंथ Valmiki Ramayana में वर्णित श्रीराम का चरित्र इस बात को स्पष्ट करता है कि मनुष्य जीवन केवल सुख और उपलब्धियों का नाम नहीं है, बल्कि यह निरंतर संघर्ष, द्वंद्व और चुनौतियों से भरा होता है। जीवन में उत्थान और पतन दोनों स्वाभाविक हैं, लेकिन इन परिस्थितियों के बीच धर्म के अनुरूप आचरण ही मनुष्य को सही दिशा देता है। यही वह मूल तत्व है, जो सीमाओं को संभावनाओं में बदल देता है।

श्रीराम का जीवन अनेक भूमिकाओं का संतुलन है। एक पुत्र के रूप में आज्ञाकारिता, एक भाई के रूप में प्रेम, एक पति के रूप में समर्पण, एक मित्र के रूप में विश्वास और एक राजा के रूप में न्याय—हर भूमिका में उन्होंने आदर्श स्थापित किए। कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने कर्तव्यों से कभी मुंह नहीं मोड़ा। लंका के राजा Ravana के साथ उनका संघर्ष केवल युद्ध नहीं था, बल्कि धर्म और अधर्म के बीच एक निर्णायक टकराव था। रावण अत्यंत विद्वान और शक्तिशाली था, लेकिन उसका अहंकार और अधर्म उसे विनाश की ओर ले गया, जबकि श्रीराम का संयम और धर्मनिष्ठा उन्हें विजय दिलाती है। श्रीराम की विशेषता यह भी रही कि उन्होंने संघर्षों का सामना अकेले नहीं किया, बल्कि समाज के हर वर्ग को साथ लेकर आगे बढ़े। वानरों से लेकर साधारण जन तक, सभी को उन्होंने अपने अभियान में सहभागी बनाया। यह दर्शाता है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो सभी को साथ लेकर चलता है और सामूहिक शक्ति से लक्ष्य प्राप्त करता है।

भारत ही नहीं, बल्कि कंबोडिया, थाईलैंड और इंडोनेशिया जैसे देशों में भी श्रीराम की कथा का प्रसार इस बात का प्रमाण है कि उनके आदर्श सार्वभौमिक हैं। Ramcharitmanas जैसे ग्रंथों ने इन मूल्यों को लोकजीवन में गहराई से स्थापित किया है। अयोध्या में बने भव्य राम मंदिर के दर्शन के लिए उमड़ती भीड़ यह दर्शाती है कि आज भी श्रीराम भारतीय जनमानस के केंद्र में विराजमान हैं। आज का वैश्विक परिदृश्य जिस दिशा में बढ़ रहा है, वह चिंताजनक है। युद्ध, हिंसा, तंक और अनियंत्रित प्रतिस्पर्धा ने दुनिया को अस्थिर कर दिया है। शक्तिशाली राष्ट्र अपने हितों के लिए नियमों और मानवीय मूल्यों को नजरअंदाज कर रहे हैं। United Nations जैसे संस्थान भी कई बार निष्प्रभावी दिखाई देते हैं। पर्यावरण संकट और सामाजिक असंतुलन ने मानव जीवन को और जटिल बना दिया है। ऐसे समय में श्रीराम का जीवन हमें आत्ममंथन का अवसर देता है। उनका संदेश स्पष्ट है कि धर्म, मर्यादा और संतुलन के बिना न तो व्यक्ति का विकास संभव है और न ही समाज का। यदि आधुनिक विश्व श्रीराम के आदर्शों—सत्य, कर्तव्य, त्याग और न्याय—को अपनाए, तो वर्तमान संकटों का समाधान संभव हो सकता है। अंततः यही कहा जा सकता है कि "राम भाव" केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि मानवता के भविष्य की दिशा है। जब तक मनुष्य अपने आचरण में राम के मूल्यों को स्थान नहीं देगा, तब तक शांति और संतुलन की कल्पना अधूरी ही रहेगी।

अस्थिरता बढ़ने का अंदेशा

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध चौथे सप्ताह में प्रवेश कर गया है और अभी इस पर विराम लगने के कोई आसार भी नहीं दिखते। देखा जाए तो यह युद्ध पश्चिम एशिया में किसी सामान्य सैन्य टकराव के बजाय, दबाव और कूटनीति की चिरपरिचित जुगलबंदी को दर्शाता है। अमेरिका लंबे समय से ईरान के प्रति ये तौर-तरीके आजमाता आया है। यह युद्ध उन्हीं का विस्तार दिखता है। बड़ी-बड़ी घोषणाओं को लेकर खास पहचान बना चुके अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वैसे तो समग्र समाधान के संकेत दिए हैं, लेकिन यह भी सच है कि युद्ध को लेकर रेखाएं धुंधली होती जा रही हैं। इस धुंधलके में युद्ध की मंशा और परिणाम, दोनों अस्पष्ट हैं। अमेरिका ने ईरान के समक्ष कुछ बिंदुओं को लेकर पहले से ही दबाव बनाया हुआ था। जैसे यूरेनियम संवर्धन पर रोक के साथ ही समूचे परमाणु कार्यक्रम पर विराम और अपने पोषित छद्म संगठनों के ढांचे को ध्वस्त करना। ये ऐसी शर्तें थीं, जिन पर ईरान कभी सहमत नहीं होता। इसके बाद युद्ध का विकल्प ही शेष था, जिसकी पहल इजरायल ने की और अमेरिका ने समर्थन किया।

यह एक पारंपरिक उकसावे वाले क्रम को ही रेखांकित करता है, जिसमें पहले कूटनीति को अल्टीमेटम के रूप में पेश किया जाता है और फिर उसी को सैन्य कार्रवाई का आधार बनाया जाता है। दूसरी ओर, ईरान ने अपनी परमाणु महत्वाकांक्षा को तो खारिज किया है, पर क्षेत्र में अपनी भूमिका को विस्तार देने की उसकी महत्वाकांक्षाएं और निरंतर बढ़ती क्षमताएं कुछ संदेह पैदा करने वाली भी रहीं।

युद्ध को लेकर बढ़ती अनिश्चितता में ट्रंप के तेवर भी बदलते दिख रहे हैं। ट्रंप ने 23 मार्च को एलान किया कि ईरान के साथ 'बहुत अच्छी और उत्पादक बातचीत' हुई। इससे पहले उन्होंने ईरान के ऊर्जा ठिकानों पर हमले के लिए एक अल्टीमेटम दिया था और फिर उक्त बातचीत का हवाला देकर उसे पांच दिनों के लिए टालने की बात भी कही। हालांकि ईरान ने ट्रंप की वार्ता के इस दांव को नकारने में देर नहीं की। ईरान अमेरिका के 15 सूत्रीय एजेंडे को खारिज भी कर चुका है और अपनी पांच स्पष्ट मांगें भी सामने रख चुका है। इस सिलसिले का चाहे जो नतीजा निकले, पर अमेरिका ने बार-बार यही दोहराया है कि ईरान को किसी भी कीमत पर परमाणु हथियार हासिल नहीं करने दिए जाएंगे। यह दोहराव कूटनीति को एक निश्चित उद्देश्य के साथ जोड़ देता है। इस सबके बीच इन वार्ताओं के इर्दगिर्द बन रहा माहौल भी एक उल्लेखनीय पहलू है। जैसे पाकिस्तान के एक मध्यस्थ के रूप में सामने आने की अटकलें और ईरानी संसद के स्पीकर से लेकर ट्रंप के विशेष प्रतिनिधियों के बीच इस्लामाबाद में संभावित बैठक।

पता नहीं इसमें कितनी सच्चाई है, पर यह तो तय है कि कूटनीतिक विकल्पों की संभावनाएं तलाशी जरूर जा रही हैं। इसमें सभी खेमों की बयानबाजी दबाव बनाने और उसकी काट के रूप में ही देखी जा सकती है। मौजूदा परिदृश्य ट्रंप की चिरपरिचित शैली से मेल खाता है, जिसमें वे अधिकतम दबाव के जरिये सौदेबाजी को प्राथमिकता देते हैं। दबाव की इसी रणनीति के तहत ईरान को लंबे समय से अस्थिरता फैलाने वाले देश के रूप में पेश किया जाता रहा है। खासतौर से उसकी परमाणु क्षमताओं और उसके रूप में इजरायल के अस्तित्व पर सदा मंडराते खतरे को। इस आख्यान में सैन्य कार्रवाई रक्षात्मक एवं आक्रामक, दोनों कसौटियों पर खरी बताई जाती है। एक तो ईरान को दंडित करना और दूसरा उसकी क्षमताओं को इतना कुंद कर देना कि उसके पास बातचीत के अलावा और कोई विकल्प शेष ही न बचे। इसके बाद किसी संभावित समझौते को सदाशयता के रूप में चित्रित किया जाता है, पर इसमें ईरान के लिए विकल्प नहीं बचते। किसी संभावित वार्ता में यदि समृद्ध यूरेनियम को हटाने का मुद्दा आता है तो संप्रभुता का सवाल भी आड़े आएगा। इस पर भी सवाल उठेंगे कि क्या ऐसा किया जाना संभव भी होगा। लगता नहीं कि तेहरान में इस पर सहमति बन पाएगी। ईरान द्वारा औपचारिक वार्ताओं से साफ इन्कार संदेह और तनाव दोनों को उजागर करता है। वार्ता को लेकर इजरायल को यह डर सता रहा है कि तनाव घटने से उन उपलब्धियों का महत्व भी घट जाएगा, जिन्हें बड़ी कठिनाई से हासिल किया गया है।

यदि ऐसा कोई ढांचा अस्तित्व में आता है तो यकीनन उसके दूरगामी प्रभाव होंगे। इससे ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर पूरी तरह पर्दा पड़ने के साथ ही उसके छद्म संगठनों पर लगाम लग जाएगी। परिणामस्वरूप क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में बड़ा बदलाव आ सकता है। होर्मुज जलमार्ग के खुलने होने से ऊर्जा बाजार में स्थिरता आ सकती है और वैश्विक अर्थव्यवस्था को कुछ राहत की सांस मिलेगी। वाशिंगटन के लिए भी यह लंबे सैन्य हस्तक्षेप के बोझ से मुक्ति के साथ ही अपने लक्ष्य पूर्ति का पड़ाव बन जाएगा। परमाणु अप्रसार को लेकर उसकी विश्वसनीयता और प्रयासों को प्रतिष्ठा मिलेगी। इसके अपने जोखिम भी हैं। ईरान की अपनी एक विशिष्ट रणनीतिक संस्कृति है। दबाव के बीच भी दृढ़ता इस संस्कृति की विशेषता है। अगर उसे ऐसा लगता है कि किसी भी तरह का संघर्ष विराम अस्थायी एवं रणनीतिक है तो बातचीत बिगड़ सकती है।

इसका नतीजा प्रमुख ऊर्जा ठिकानों पर हमले के रूप में सामने आ सकता है। इससे पूरे क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ेगी और ऊर्जा संसाधनों की कीमतों का रुख परेशानी बढ़ाएगा। अगर रणनीतिक बढ़त को लेकर अमेरिका एवं इजरायल के बीच असहमति बढ़ती है तो उनके समीकरण भी बदलेंगे। अब जो परिदृश्य आकार ले रहा है, वह शांति के बजाय यही दर्शाता है कि आने वाले दिनों में संघर्ष अन्य स्वरूपों में जारी रहेगा। तमाम तरह के कूटनीतिक प्रस्तावों के जरिये ट्रंप सामरिक मोर्चे पर मिली बढ़त को कूटनीतिक परिणामों में बदलने का प्रयास कर रहे हैं। क्या बातचीत की ऐसी पेशकश पश्चिम एशिया से जुड़े सभी समीकरणों को नए सिरे से तय करने का काम करेगी या यह फिर यह एक अस्थायी विराम होगा? इसकी नियति केवल बयानबाजी से नहीं, बल्कि इरादों से तय होगी, जिसमें भरोसे की बड़ी अहमियत होने वाली है।

नई टीम का काउंटडाउन शुरू, हर जिले से नए चेहरों की एंट्री के बाद बनेगी BJP प्रदेश कमेटी

रांची। झारखंड की राजनीति में जल्द ही बड़ा संगठनात्मक बदलाव देखने को मिलने वाला है। Bharatiya Janata Party ने राज्य में अपनी जिला कमेटियों के गठन का काम लगभग पूरा कर लिया है और अब नजरें प्रदेश कमेटी के गठन पर टिक गई हैं। पार्टी सूत्रों के अनुसार, अगले दो से तीन दिनों में सभी जिलों की कमेटियों की घोषणा कर दी जाएगी, जिसके बाद प्रदेश स्तर पर नई टीम के गठन की प्रक्रिया तेज हो जाएगी। राज्य में पार्टी ने 30 सांगठनिक जिलों का ढांचा तैयार किया है, जिनमें से 27 जिलों में नए जिला अध्यक्षों की नियुक्ति पहले ही की जा चुकी है। बाकी जिलों में भी अंतिम चरण की प्रक्रिया जारी है। प्रदेश से नियुक्त पर्यवेक्षक विभिन्न जिलों का दौरा कर रहे हैं और स्थानीय स्तर पर कार्यकर्ताओं तथा नेताओं से चर्चा के बाद पदाधिकारियों के नामों को अंतिम रूप दे रहे हैं। ये पर्यवेक्षक अपनी रिपोर्ट प्रदेश अध्यक्ष Aditya Sahu को सौंपेंगे, जिसके आधार पर औपचारिक घोषणा की जाएगी।

इस बार जिला कमेटियों के गठन में पार्टी ने विशेष सावधानी बरती है। सामाजिक समीकरणों को संतुलित रखने के साथ-साथ सक्रिय और मेहनती कार्यकर्ताओं को प्राथमिकता देने पर जोर दिया जा रहा है। हाल ही में हुए स्थानीय निकाय चुनावों में अपेक्षित सफलता न मिलने के बाद केंद्रीय नेतृत्व ने साफ निर्देश दिए हैं कि संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत किया जाए और कार्यकर्ताओं की नाराजगी या गुटबाजी को किसी भी स्थिति में बढ़ने न दिया जाए।

सूत्रों के मुताबिक, प्रदेश कमेटी के गठन में भी बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। हर जिले से लगभग 10 से 12 नए चेहरों को शामिल किए जाने की तैयारी है, ताकि संगठन में नई ऊर्जा और संतुलन लाया जा सके। इससे न केवल क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व बढ़ेगा, बल्कि पार्टी को जमीनी स्तर पर मजबूती भी मिलेगी। प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू जिलों में संगठनात्मक प्रक्रिया पूरी होने के बाद अपनी नई टीम की घोषणा करेंगे। संभावना जताई जा रही है कि अप्रैल के मध्य तक नई प्रदेश कमेटी सामने आ जाएगी। इस कमेटी में जिलों से चुने गए प्रतिनिधियों को भी जगह दी जाएगी, जिससे संगठन में व्यापक भागीदारी सुनिश्चित हो सके। केंद्रीय नेतृत्व भी इस पूरी प्रक्रिया पर नजर बनाए हुए है। प्रदेश प्रभारी Laxmikant Vajpayee अप्रैल के पहले सप्ताह में रांची पहुंचेंगे और उनके दौरे के दौरान प्रदेश कमेटी के स्वरूप पर अंतिम चर्चा होगी। इसी दौरान प्रदेश महामंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों के लिए नामों पर भी सहमति बनाई जाएगी। संगठन को और अधिक मजबूत करने के लिए भाजपा प्रशिक्षण पर भी विशेष जोर दे रही है।

लॉरेंस गैंग के नेटवर्क की जांच करेगी SIT

कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के नेटवर्क का खौफ प्रदेश के इंदौर, अशोकनगर, खरगोन और राजधानी भोपाल तक पहुंच गया है. उसके गुर्गों की सक्रियता को देखते हुए अब पुलिस भी एक्शन मोड में आ गई है. मध्य प्रदेश पुलिस के DGP कैलाश मकवाना ने अब लॉरेंस गैंग के हैरी बॉक्सर की धमकियों के मामले को गंभीरता से लेते हुए STF को इसकी जांच सौंप दी है. ADG (STF) श्रीनिवास वर्मा को इसका नोडल अधिकारी बनाया गया है।

लॉरेंस गैंग को लेकर मध्य प्रदेश पुलिस सतर्क

मध्य प्रदेश के कई जिलों में हैरी बॉक्सर और उसके लिए काम करने वाले अपराधियों से मिले धमकी भरी कॉल्स के मामले में पुलिस ने बड़ा कदम उठाया है. मामले की गंभीरता को देखते हुए मध्यप्रदेश पुलिस मुख्यालय ने अब जांच को तेज और प्रभावी बनाने के लिए विशेष जांच दल (SIT) का गठन किया है। DGP कैलाश मकवाना ने इस पूरे मामले की मॉनिटरिंग का जिम्मा एसटीएफ के एडीजी श्रीनिवास वर्मा को सौपा है. डीजीपी ने इस मामले में एसआईटी को इसलिए जांच सौंपी है क्योंकि मध्य प्रदेश के कई शहरों में बड़े-बड़े व्यापारियों को उनकी जान बख्शने के नाम पर धमकी देकर करोड़ो रु की मांग की जा रही है. रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि ये धमकियां लॉरेंस बिश्नोई के लिए काम करने वाले हैरी बॉक्सर और उसके द्वारा मध्य प्रदेश में सक्रिय किए गए अपराधियों से आ रही हैं। पुलिस मुख्यालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि जांच में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी. साइबर और तकनीकी टीमों को भी सक्रिय कर दिया गया है जिससे कॉल्स के स्रोत और नेटवर्क का पता लगाया जा सके।

एसआईटी में ये अधिकारी शामिल

पुलिस मुख्यालय द्वारा जारी आदेश के मुताबिक डीजीपी द्वारा गठित एसआईटी में एसआईटी प्रभारी डीआईजी राहुल कुमार लोढ़ा, एसटीएफ भोपाल एसपी राजेश भदौरिया, एसटीएफ इंदौर एसपी नवीन कुमार चौधरी, एटीएस एसपी मुख्यालय वैभव श्रीवास्तव, एआईजी सुधीर कनौजिया के साथ-साथ 4 डीएसपी शामिल किए गए हैं।

कोर्ट का बड़ा फैसला

नाबालिग से रेप और हत्या की कोशिश के आरोपी को मौत की सजा

बरहामपुर फास्ट ट्रैक स्पेशल कोर्ट ने एक नाबालिग से रेप करने, उसको गंभीर रूप से घायल करने और आखिर में गला घोंटकर उसकी हत्या की कोशिश करने के आरोपी को मौत की सजा सुनाई है कोर्ट ने गुरुवार को पीड़ित को 5 लाख रुपये का मुआवजा देने का भी आदेश दिया है. पुलिस ने इस मामले में कुल 13 गवाहों के साथ चार्जशीट दाखिल की थी मामले की सुनवाई के बाद बरहामपुर फास्ट ट्रैक विशेष न्यायालय के न्यायाधीश ने मामले को विरल मामला मानते हुए पोलसरा थाना कांड संख्या 417/21-11-21 में भारतीय दंड संहिता की धारा 376(2), (एफ), 376(ए)(बी) के तहत आरोपी को मौत की सजा सुनाई।

इस बारे में उड़ीसा हाई कोर्ट को जानकारी दे दी गई है. यह केस बरहमपुर के फास्ट ट्रैक स्पेशल कोर्ट में विशेष लोक अभियोजक शिवप्रसाद मिश्रा देख रहे थे. यह घटना 20 नवंबर 2021 को गंजाम जिले के पोलसारा पुलिस स्टेशन इलाके में हुई जब नाबालिग अपने चाचा के घर गई थी, तो 30 साल के आरोपी केशव नाहक ने नाबालिग को बहला-फुसलाकर पास के नदी किनारे जंगल में ले जाकर उसके साथ रेप किया नाबालिग के मदद के लिए चिल्लाने पर आरोपी केशव नाहक ने नाबालिग को बुरी तरह घायल कर दिया और आखिर में उसका गला दबाकर उसे मारने की कोशिश की. हालांकि, नाबालिग के बेहोश हो जाने के बाद आरोपी उसे मरा हुआ समझकर मौके से भाग गया. बाद में, जब वह पास के खेल के मैदान से कुछ बच्चों के साथ खेलकर लौट रहा था, तो उसने बच्ची को बेहोश हालत में देखा और उस पर पानी फेंक दिया। इस बीच, परिवार नाबालिग लड़की को ढूंढ रहा था और खबर मिलने के बाद, उसे पहले पोलसारा सीएचसी हेल्थ सेंटर और फिर बरहामपुर एमकेसीजी मेडिकल सेंटर में भर्ती कराया गया नाबालिग लड़की का इलाज बरहामपुर मेडिकल सेंटर के पीडियाट्रिक डिपार्टमेंट के आईसीयू में किया गया. उस समय तत्कालीन पुलिस स्टेशन ऑफिसर जितेंद्र कुमार मल्लिक ने आईसीयू में नाबालिग लड़की का बयान दर्ज करने के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था और वह फिलहाल अंडरट्रायल कैदी के तौर पर जेल में है।

मंत्री तुलसी सिलावट के इस्तीफे की उठी मांग, PM को लिखा गया लेटर

मध्य प्रदेश में कारम बांध को लेकर एक बार फिर से सियासत तेज होती हुई दिखाई दे रही है, जहां प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता संगीता शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है और उन्होंने जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट को मंत्रिमंडल से तत्काल हटाने की मांग कर डाली है और उनके खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज करने की भी बात कही गई है. इसके अलावा पूरे मामले में आर्थिक अपराध का प्रकरण दर्ज कराने की मांग की गई है. प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता संगीता शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने कई गंभीर आरोप लगाए हैं. इसके अलावा मंत्री तुलसी सिलावट के इस्तीफे के मांग की है प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता संगीता शर्मा ने आरोप लगाया कि अगस्त 2022 में निर्माणाधीन बांध के क्षतिग्रस्त होने से लाखों लोगों के जीवन पर खतरा मंडराने लगा था. घटना के बाद सितंबर 2022 में जल संसाधन विभाग के अधिकारियों को निलंबित कर विभागीय जांच शुरू की गई थी।

पांच इंजीनियरों को पाया गया दोषी

उन्होंने पत्र में आगे लिखा है कि जांच रिपोर्ट में निर्माण कार्य में तकनीकी लापरवाही, अमानक निर्माण सामग्री और पर्याप्त तैयारी के बिना बांध के नाला पोर्शन को बंद करने जैसे गंभीर फैसलों को संकट का कारण बताया गया है. रिपोर्ट में पांच इंजीनियरों को दोषी पाया गया है इतने गंभीर आरोपों के बावजूद संबंधित अधिकारी को निलंबन से बहाल कर जल संसाधन विभाग की महत्वपूर्ण तकनीकी संस्था ब्यूरो ऑफ डिजाइन (बोधी) में संचालक (बांध) का प्रभार दे दिया गया।

तुलसी सिलावट के इस्तीफे की कर डाली मांग

इसके अलावा उन्होंने आरोप लगाया कि विभागीय जांच की फाइल लंबे समय तक लंबित रखी गई और जांच अधिकारी के अनुमोदन में लगभग एक वर्ष का विलंब किया गया. उन्होंने प्रधानमंत्री से मांग की जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट को तत्काल मंत्रिमंडल से बर्खास्त किया जाए।

है कारम बांध मामला?

मध्य प्रदेश के धार जिले में कारम बांध मामला एक चर्चित प्रशासनिक और तकनीकी विवाद है. इसमें अगस्त 2022 में अचानक दरार पड़ गई थी. इससे बांध टूटने का खतरा बढ़ गया था. इसके बाद आसपास के कई गांवों में बाढ़ का खतरा पैदा हो गया.प्रशासन ने तुरंत कई गांव खाली करवाए और हजारों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया था. बाद में बांध का पानी नियंत्रित तरीके से निकालकर खतरे को टाला गया।

इन्दौर ट्रामा सेंटर के खिलाफ जिला प्रशासन की बड़ी कार्यवाही

सिटी स्कैन और सोनोग्राफी की मशीन सील कर ,अपंजीकृत डाक्टर्स को नोटिस थमाए

इंदौर। आज खण्डवा रोड पर संचालित एक निजी अस्पताल की सीटी स्कैन और सोनोग्राफी मशीन को जंहा सील कर दिया गया तो वंही यंहा पर कार्यरत अपंजीकृत डाक्टर्स को नोटिस भी जारी किए गए है।

जिला प्रशासन के निर्देश के चलते दयाल बाग कॉलोनी में इंदौर ट्रामा सेन्टर की आज आकस्मिक जांच की गई, निरीक्षण के दौरान अस्पताल में पाँच से ज्यादा अपंजीकृत चिकित्सक जंहा सोनोग्राफी और ईको सम्बन्धित कार्य करते हुए पाए गए तो वंही मौके पर अपंजीकृत सिटी स्केन और सोनोग्राफी मशीन भी संचालित पायी गयी। अधिकारियो इन मशीनों को तत्काल सील कर दिया । इसके अलावा सम्बन्धित अस्पताल प्रबन्धन को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया।

इसके साथ ही पीसीपीएनडीटी प्रमाण पत्र के नवीनीकरण पर रोक लगाते हुए पंचनामा बनाने की कार्यवाही की गयी। इतना ही नही जिला प्रशासन ने इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग को सभी अपंजीकृत चिकित्सक डॉ सुयश सक्सेना, डॉ शैलेन्द्र पटेल, डॉ राजेश करंजिया, डॉ रावेश गुर्जर, डॉ प्राची बाथम सहित अन्य को नोटिस जारी करने के निर्दश दिए।

ईरान का बड़ा अल्टीमेटम, बहरीन-दुबई पर हमलों की दी खुली धमकी

मिडिल ईस्ट में जारी तनाव अब और खतरनाक मोड़ लेता दिख रहा है। इजरायल और अमेरिका बनाम ईरान के बीच चल रहे संघर्ष के बीच ईरान ने एक नई और सख्त चेतावनी जारी की है, जिसने पूरे क्षेत्र में चिंता बढ़ा दी है।

ईरान ने दी चेतावनी- ईरान ने साफ तौर पर बहरीन और संयुक्त अरब अमीरात के होटल मालिकों को अल्टीमेटम देते हुए कहा है कि अगर उनके होटलों में अमेरिकी सैन्यकर्मियों को ठहराया जाता है, तो ऐसे होटल वैध सैन्य लक्ष्य माने जाएंगे। यह जानकारी ईरान की अर्ध-सरकारी समाचार एजेंसी फार्स की रिपोर्ट में सामने आई है। होटलों को बनाया निशाना- रिपोर्ट के मुताबिक, हालिया हमलों और ईरान समर्थित समूहों के संयुक्त अभियानों के बाद अमेरिकी सेना ने क्षेत्र के कई होटलों और नागरिक ठिकानों में शरण ली है। ईरान का कहना है कि जो भी प्रतिष्ठान विदेशी सैनिकों को पनाह देंगे, वे सीधे तौर पर हमले के दायरे में आ जाएंगे। यह चेतावनी तत्काल प्रभाव से लागू मानी जा रही है।

मध्य पूर्व में फैली अमेरिकी सैन्य मौजूदगी- दूसरी ओर, शिन्हुआ की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अमेरिकी सैन्यकर्मी अब पारंपरिक सैन्य ठिकानों के बजाय नागरिक क्षेत्रों में मौजूद हैं। रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी गतिविधियों के कुछ प्रमुख स्थान इस प्रकार हैं: बेरूत के पुराने एयरपोर्ट के पास लॉजिस्टिक बेस। दमिश्क का रिपब्लिक पैलेस। फोर सीजंस और शेरेटन जैसे लग्जरी होटल। जिबूती इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जहां हाल ही में अमेरिकी मरीन तैनात किए गए। बताया जा रहा है कि ये सैनिक इस्तांबुल और सोफिया के रास्ते जिबूती पहुंचे हैं।

नागरिकों को ढाल बना रहा है अमेरिका ईरान- ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने पहले ही खाड़ी देशों को चेताया था। उनका आरोप है कि अमेरिकी सैनिक अपने सैन्य ठिकानों को छोड़कर नागरिक इलाकों में शरण ले रहे हैं और स्थानीय लोगों को मानव ढाल की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। इस बयान के बाद क्षेत्र में तनाव और बढ़ गया है।

कैसे शुरू हुआ संघर्ष?- गौरतलब है कि 28 फरवरी को अमेरिका और इजरायल ने ईरान के तेहरान समेत कई शहरों पर संयुक्त हमला किया था। इन हमलों में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई, कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक मारे गए। इसके जवाब में ईरान ने भी आक्रामक रुख अपनाते हुए इजरायल और अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन हमले किए, होर्मुज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण सख्त कर दिया।

MTH अस्पताल में गार्ड पर रिश्वत मांगने के आरोप, पलक चौहान ने कहा "ड्यूटी पर ही नहीं थी, साजिश के तहत बदनाम किया जा रहा"

खुशबू श्रीवास्तव

इंदौर के Maharaja Tukojirao Hospital (एमटीएच) में एक बार फिर विवाद सामने आया है, जहां अस्पताल में तैनात गार्ड पलक चौहान पर मरीज के परिजनों द्वारा पैसे मांगने के गंभीर आरोप लगाए गए हैं। इस मामले ने अस्पताल प्रबंधन और सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं, वहीं दूसरी ओर आरोपित गार्ड ने इन सभी आरोपों को पूरी तरह से झूठा और निराधार बताया है। मामले के अनुसार, अस्पताल में भर्ती एक मरीज के परिजनों ने दावा किया कि उनसे अस्पताल परिसर के भीतर सुविधा देने या किसी प्रकार की मदद के बदले पैसे की मांग की गई। परिजनों का कहना है कि यह मांग अस्पताल में तैनात गार्ड पलक चौहान द्वारा की गई, जिससे वे काफी आहत और परेशान हुए। उन्होंने इस पूरे घटनाक्रम को गंभीर बताते हुए इसकी शिकायत भी करने की बात कही है।

हालांकि, जब इस पूरे मामले में गार्ड पलक चौहान से बातचीत की गई, तो उन्होंने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि यह एक साजिश के तहत उन्हें बदनाम करने की कोशिश है। पलक चौहान ने स्पष्ट रूप से कहा कि जिस समय की यह घटना बताई जा रही है, उस दौरान उनकी ड्यूटी ही नहीं थी, ऐसे में उन पर लगाए गए आरोप पूरी तरह से गलत और बेबुनियाद हैं। उन्होंने यह भी कहा कि बिना किसी जांच के इस तरह के आरोप लगाना उनकी छवि को नुकसान पहुंचाने का प्रयास है। इस घटना के सामने आने के बाद अस्पताल प्रशासन की भूमिका भी अहम हो जाती है, क्योंकि एक तरफ मरीजों और उनके परिजनों की शिकायतें हैं तो दूसरी तरफ सुरक्षा कर्मी का स्पष्ट इंकार। ऐसे में सच्चाई क्या है, यह निष्पक्ष जांच के बाद ही सामने आ सकेगा। अस्पताल प्रबंधन यदि इस मामले को गंभीरता से लेकर जांच करता है, तो इससे न केवल सच्चाई सामने आएगी बल्कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं पर भी अंकुश लगाया जा सकेगा। फिलहाल यह मामला आरोप और इनकार के बीच उलझा हुआ है, जिसमें एक ओर परिजनों का पक्ष है तो दूसरी ओर गार्ड का बचाव। अब सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि अस्पताल प्रशासन इस पूरे प्रकरण में क्या कदम उठाता है और जांच के बाद कौन-सी सच्चाई सामने आती है।